(b) Production and consumption of paper and paper boards are nearly matching. Date in respect of paper, paper boards and kraft paper is not maintained separately. The demand projections of paper and paper boards upto the year 2000 A.D. are as under:

Yea	Demand (lakh tonnes)
1989-90 . . .	18·25
1994-95 . . .	24·60
2000 A.D. . . .	28·31

The production of paper and paper boards during the last three years has been as under:—

Year	Production (lakh tonnes)
1989	18·50
1990 . . .	19·56
1991 . . .	19·65

Demand and production of newsprint during the last three years are given below:—

(Figures in lakh tonnes)

Year	Demand	Production
1989-90 . . .	5·60	2·64
1990-91 . . .	5·65	2·79
1991-92 . . .	5·85	2·85

(c) and (d) Imports of newsprint during the last three years are given nelow:—

Y	Imports (lakhs tonnes)
1989-90 . . .	2·24
1990-91 . . .	2·26
1991-92 . .	2·15 (provisional)

As per the available information a quantity of 48178 MT of speciality papers, like art paper, cheque paper, bond paper etc. was imorted during the year 1989-90.

जवाहर रोजगार योजना की उपलब्धियां

***248. सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा :**
श्री राम जेठमलानी :

क्या **प्रधान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 27 अप्रैल, 1992 के "इकोनामिक टाइम्स" में "जे०आर०वाई० बिइंग रिकास्ट लाइकली टू बी लिमिटेड टू पूअर स्टेट्स" शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है ;

(ख) क्या यह सच है कि सरकार इस योजना के अंतर्गत अब तक प्राप्त हुई उपलब्धियों से पूरी तरह संतुष्ट नहीं

(ग) यदि हां, तो क्या सरकार इस योजना में कतिपय सुधार करने पर विचार कर रही है ; और

(घ) यदि हां, तो प्रस्तावित सुधारों का ब्यौरा क्या है और इन्हें कब तक कार्यान्वित कर देने का विचार है ?

ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री जी० वेंकटस्वामी) : (क) जी हां।

(ख) यद्यपि इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार पैदा किया गया है तथा सामाजिक और आर्थिक स्वरूप की परिसम्पत्तियां बनाई गई हैं, तथापि सरकार इस योजना के निष्पादन में गुणात्मक तथा मात्रात्मक, दोनों ही तरह से सुधार लाने की आवश्यकता के प्रति सचेत है।"

(ग) और (घ) सरकार का विचार लगातार अधिक से अधिक रोजगार सुनिश्चित करने के उद्देश्य से इस योजना में आवश्यक सुधार लाने का है। इस संबंध में ब्यौरे आठवीं पंचवर्षीय योजना को अंतिम रूप दिए जाने के बाद तैयार किए जायेंगे।

Effect of Government's Indecision on the Performance of Public Sector undertaldDgK

*251. SHRI RAMDAS AGARWAL: CHARYA: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) whether delay in Government's deciding the fate of Chief Executives in various public sector undertakings on the question of irregularities in in their appointment has led these public sector undertakings to suffer with inefficient and disgruntled ma nagements; and

(b) if so, what steps Government propose to take to safeguard the in terest of these public sector under takings?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INDUSTRY (SHRI P. K. THUNGON): (a) No,

Sir.

(b) Does not arise.

वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य

*250. **श्रीमती सुषमा स्वराज :**
सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में औद्योगिक क्षेत्र में अनुसंधान कार्य करने के लिए वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद् की स्थापना की गई है;

(ख) यदि हां, तो इस परिषद् की स्थापना किस वर्ष में की गई थी;

(ग) परिषद् का वर्तमान वार्षिक बजट कितना है;

(घ) क्या यह सच है कि इस परिषद् में 70 हजार से अधिक कर्मचारी कार्यरत हैं, जिनमें से 6 हजार वैज्ञानिक और तकनीशियन हैं तथा लगभग पर प्रयोगशालायें इसके अन्तर्गत कार्य करा रही है;

(ङ) यदि हां, तो वास्तविक स्थिति क्या है; और

(च) दिसम्बर, 1991 तक परिषद् ने किस-किस उद्योग के लिए कुल कितने शोध कार्य करने में सफलता प्राप्त की है

कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्रीमती मारग्रेट आल्वा) : (क) जी हां।

(ख) वर्ष 1942 में।

(ग) रु० 291.77 करोड़ (सी एस आई आर) के आन्तरिक संसाधनों द्वारा अर्जित रु० 30 करोड़ सहित।

(घ) और (ङ) वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (सी एस आई आर) में लगभग 24,900 कर्मचारी हैं जिनमें में लगभग 6,000 वैज्ञानिक हैं। सी एस आई आर के अन्तर्गत कार्यरत प्रयोगशालाओं की संख्या चालीस (40) है।

(च) परिषद् ने छठी योजना के दौरान लगभग 215; सातवीं योजना के दौरान 190 और अप्रैल-दिसम्बर, 1991 की अवधि के दौरान लगभग 85 से अधिक प्रक्रमों/तकनीकी जानकारियों का, विकास किया। ये मुख्य रूप से पेट्रोलियम पेट्रो-रसायनों, औषधियों और भेषजीय, कृषिरसायनों, जैव-प्रौद्योगिकी, चमड़ा, कोयला, इलेक्ट्रोनिकी और यान्त्रिकरण (इंस्ट्रूमेंटेशन) के क्षेत्र में है।